परिशिष्ट – 1

पद्मश्री मेहरून्निसा परवेज़ द्वारा शोधार्थी को दिये गये साक्षात्कार

शोधार्थी: आप अपने जीवन के बारे में कुछ बताइये ?

मेहरून्निसा: मेंरे जीवन में सबसे पहले तो मैं अपनी माँ के प्रति बहुत ज्यादा प्रभावित रही, मैंने अपनी माँ को बहुत पढ़ा, एक नारी के रूप में पहली नारी है, जिनको मैंने समझा। हला की मेरे पिताजी बहुत बड़े ऑफिसर थे और मेरी माँ बहुत कम पढ़ी-लिखी थी, चौथी क्लास उर्दू पड़ी थी बचपन में ही उनके मां-बाप गुजर गए थे। उन्होंने दु:ख भी बहुत देखा था। मैंने अपनी माँ को बहुत नजदीक से देखा उनसे बहुत प्यार पाया उन्होंने मेरा हर जगह साथ दिया। वह रोती थी तो हमें भी रोना आ जाता था, हम भी उनके साथ रो लेते थे तो हमको लगता था, कि औरत कैसे रोती है। नारी को मैंने कहीं समझा है, तो अपनी माँ से जाना समझा है

शोधार्थी: निम्न व मध्यवर्ग पर लिखने की प्रेरणा आपको कहां से और कैसे मिली ? क्योंकि जिस समय आप अपने लेखन की शुरुआत करती हैं, उस समय नई-नई विचारधाराओं पर लिखा जा रहा था, उन सब के बीच आपने निम्न तथा मध्य वर्ग की स्त्रियों को ही क्यों चुना ?

मेहरून्निसा: मैंने बहुत कम पढ़ी किताबों से प्रेरणा ली, मैंने अपने आस-पास के लोगों से बहुत प्रेरणा ली।

परवेज़ उनके बीच में ज्यादा रही हूँ, तो उनसे बात करना उनके जीवन को ध्यान से देखना - परखना मैंने जीते जागते लोगों को ही जाना है । पढ़े हुए ज्ञान से नहींसमझा। मैंने जो जाना वह व्यक्तिगत रूप से ही समझा है। मेरी फ्रेंड वगैरह भीबहुत साधारण परिवारों से थी, उनके भी बहुत छोटे छोटे घर थे। उनमें से कोईहाई क्लास के घर की नहीं थी। वह भी साधारण घर से थी क्योंकि पहले लड़कियों को पढ़ाते नहीं

थे। वह छोटे-छोटे घर की लड़कियां थी उनसे ही मैंने जीवन के बारे में देखा-समझा। पिताजी का जहाँ ट्रांसफर होता था वहां-वहां हम जाते थे और जगह-जगह सबसे प्रेरणा मिलती थी हमारे यहां जात-पात का भेदभाव नहीं रहा पिताजी भी बहुत पढ़े लिखे थे, माँ बहुत पढ़ी-लिखी नहीं थी, फिर भी हमारे यहां जात-पात नहीं मानते थे हमारा परिवार ज्यादा झंझटों में नहीं पड़ता। हर जात के लोगों से मिलकर रहते हैं।

शोधार्थी : आपको लेखिका बनने की प्रेरणा कहां से मिली और आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किस साहित्यकार ने किया ?

मेहरून्निसा : मुझे जीते जागते आस-पास में जो पात्र मिलते थे, मुझे लगता था कि उनके जीवन के विषय

परवेज़ में मुझे लिखना चाहिए उनसे प्रेरणा मिलती थी तो मैं लिखती थी। लिखने के प्रति मुझे बड़ा लगाव रहा हैं, हमारे स्कूल में कुछ लिखकर लाने को कहा जाता तो मैं लिखकर जाती थी।

लड़कियां बड़े मन से सुना करती थी मुझे लिखने की वजह से स्कूल में बहुत दंड भी मिला। मैं मॉनिटर थी सबकी कॉपियां लेकर चेक करवाने जाती थी, लेकिन मेरी कॉपी कभी चेक होने नहीं जाती मैडम कहती थी तुम्हारी कॉपी चेक होने नहीं आती, मैं इसलिए अपनी कॉपी नहीं देती थी । क्योंकि कॉपी के पीछे मेरा बहुत कुछ लिखा हुआ होता था, मैं हमेशा लिखती रहती थी इसी आदत के वजह से क्लास के बाहर खड़ा कर दिया जाता था। मेरे माता-पिता भी बहुत साल तक नहीं जान पाए कि मैं लिखती हूं एक बार मेरे पिता जी कांकेर के दौरे पर थे। कांकेर और बस्तर दोनों जिला उनके अंडर में था वहा उनके असिस्टेंट ने आकर कहां की आपकी बेटी की कहानी छपी है, उन्होंने कहा हमारे यहां कोई

लिखता नहीं है उसने कहा नहीं सर छपी है उन्होंने देखा तो छापी थी। जब वह जगदलपुर आए तो उन्होंने मुझे बुलाया और मुझसे कहा यह तुमने लिखा है मैं कुछ नहीं बोली खड़ी रही और आंखों से आंसू टपकतें रहे, मैंने सोचा लिखना इतना मुश्किल काम है क्या ? गलत काम है क्या ? उसके बाद मेरे पिता ने कभी मुझसे नहीं पूछा तुम क्यों लिखती हो।

हमारे घर में रोज कचहरी बैठती थी हर आदमी शिकायत करने लड़ने आ जाते थे, और कहते थे उसने हमारे पर कहानी लिख दी, मेरी माँ पल्लू मेरे पैरों पर रख देती थी और बोलती थी बेटा तू क्या करती है क्यों लिखती है तुझे क्या परेशानी है मैं बहुत डर जाती थी मुझे लगता था, कि लिखना इतना बड़ा जुर्म है क्या ? जो सब मेरे पीछे पड़े रहते हैं। जबकि मैं उनके यहां कभी गई ही नहीं फिर भी पता नहीं क्यों उनको लगता है कि मैंने उन पर कहानी लिखी है। हाँ मगर मेरा ध्यान हर जगह रहता था जब मुझे लिखने लायक कोई पात्र मिलता हैं तो मैं उसपर जरूर लिखती हूँ।

शोधार्थी : आप अपनी पसंद ना पसंद और रुचि के बारे में बताइए ?

मेहरून्निसा : मेरी मां बहुत सीधी-सादी साधारण थी और इस वजह से मैं भी बहुत सीधी सादी ही रही

परवेज़ और अपनी बेटी को भी वैसे ही पाला हमारा ज्यादा फैशनेबल लोगों से संपर्क नहीं रहा, यह मेरी माँ की परवरिश थी मेरी बेटी को भी यही शिक्षा दी की बस अपने पैरों पर खड़ी हो जाओ और उसने कर दिखाया। खासकर मैं मुस्लिम परिवारों और अन्य कास्ट के लोगों में भी देखा की महिलाओं में बहुत दु:ख परेशानी है यह परेशानियां तभी खत्म हो सकती हैं जब हम लड़कियों को अच्छी शिक्षा दे। कम से कम उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए। उन्हें कुछ मत दो प्रॉपर्टी मत

दो, गहने मत दो, बस पढ़ा दो, इन्हें बेटे की तरह ही पढाओं। उनसे उम्मीद रखनी चाहिए। जैसे हमारे यहाँ कहा जाता हैं कि बेटी के घर का पानी नहीं पीना चाहिये। लेकिन मेरा मानना है कि जैसे हम अपने बेटे से उम्मीद लगातें हैं कि वो पढ़-लिख कर हमें कमा कर खिलायेगा, वैसे ही बेटी से भी उम्मीद करनी चाहिए। जब बेटा हमारी जिम्मेदारी ले सकता है तो बेटी क्यों नहीं । बेटा-बेटी में भेद-भाव नहीं करना चाहिए।

शोधार्थी : आपके साहित्य को पढ़ते समय मुझे पता चला की लाल गुलाब कहानी सच्ची घटना पर आधारित कहानी है। आपके उस कहानी में जो 'नेहा' का पात्र है, उसने मुझे बहुत प्रभावित किया है, मैं जानना चाहती हूं कि अब वह कहाँ और कैसी है?

मेहरून्निसा परवेज़ : कहीं-कहीं ही ऐसे पात्र मिलते हैं, लेकिन ऐसे लोग बहुत दु:ख भी पाते हैं उनको समाज प्रताड़ित करता है, घर के लोग भी प्रताड़ित करते हैं, खानदान भी प्रताड़ित करता है, भाई बहन भी परेशान करते हैं।

शोधार्थी : आपके साहित्य पर अभी तक जितने भी रिसर्च हुए हैं तो क्या आपको लगता है आपके दृष्टिकोण को समझ गया है ? आप क्या चाहती हैं आपके साहित्य की समीक्षा किस दृष्टि से होनी चाहिए ?

मेहरून्निसा परवेज़: समझदार लड़कियां ही पी.एच.डी. कर रहीं हैं और अच्छा कर रही है, यह भी खुशी की बात है और मैं तो उनको बधाई देना चाहती हूँ।

शोधार्थी : आपने अपने साहित्य में जिस तरह के स्त्री पात्र तथा उनके संघर्षों को चित्रित किया है उसके पीछे का उद्देश्य क्या है ?

मेहरून्निसा : मैं बताना चाहती थी कि दुनिया में आज भी औरत कितनी दु:खी है जैसे कि मेरे पिताजी

परवेज़ नागपुर के पढ़े हुए थे घर से भाग के पढ़ाई की थी मेरे दादा जी जमींदार थे पहले लड़कों को पढ़ाया नहीं जाता था। लेकिन उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की, पर इस तरह का कदम लड़कियां क्यों नहीं उठा सकती,उन्हें क्यों नहीं लड़कों की तरह अच्छी स्कूल कॉलेज में पढ़ने भेजते हैं।

शोधार्थी: आप के कथा-साहित्य में बहुत से पात्र समाहित है कोई ऐसा पात्र, जो आज भी आपके बहुत समीप है और क्यों ?

मेहरून्निसा: अब जैसे मेरे पिताजी बहुत अच्छी जगह पढ़े-लिखे थे , उसके बावजूद हमारे माँ क्यों रोती

परवेज़ थी ? यह प्रश्न हमारे सामने आता था वह बड़े ऊंचे पद पर थे, बहुत बड़े-बड़े लोगों के साथ इंसाफ किया था, बहुत अच्छे जस्टिस थे बहुत अच्छे फैसले करते थे, उन्होंने बस्तर के महाराज को सजा दी थी। उसके बावजूद हमारी माँ रोती है, तो क्यों रोती है ? तो वह माँ नहीं है, वह हमारे सामने एक औरत है। आप किस चीज से उसे अपमानित करते हो, अगर आप बहुत हैंडसम भी हो तो अपने लिए हो, वो थोड़ा कम खूबसूरत भी है तो भी तुम्हें निभाना चाहिए। पाप, धर्म सिर्फ नारी के लिए है क्या ? हम रोज रामचंद्र जी की पूजा करते हैं अगर हम देखे तो सबसे ज्यादा किसी ने दंड दिया है तो रामचंद्र ने दिया है। सीता ने कितने दु:ख उठाए हैं, कितना कुछ नहीं सहा, सीता ने वह भी उस जमाने में सोचिए कितनी मुश्किलों से उसने बच्चे का पालन-पोषण किया और उनका अधिकार उनके बच्चों ने ही दिलाया।

शोधार्थी : आपकी अधिकांश रचनाएँ 'बस्तर' के जन-जीवन पर आधारित है उस जिले में ऐसी क्या विशेषता या सामानता दिखी, जिसने ठहर कर लिखने को मजबूर किया ?

मेहरून्निसा : बस्तर जिले में ज्यादा रही हूँ, बहुत जल्दी हमारे पिताजी का ट्रांसफर वहाँ हो गया था, तो

परवेज़ बहुत छोटी उम्र में स्कूल से लेकर आगे तक वहां का जीवन हमने देखा समझा जितना भी देखा मैंने नारी को दु:खी ही देखा तो यह सुधरना चाहिए। मैं कहती हूं हमारे देश में प्रधानमंत्री भी महिला रही है। उसके बावजूद हमारे देश के कायदे कानून क्यों नहीं सुधरे हैं सुधारने चाहिए आज तक वही का वही है।

शोधार्थी: 'कोरजा' उपन्यास में आपने जिस तरह के स्त्री पात्रों को दिखाया है क्या उसी तरह के लोग थे बस्तर में ?

मेहरून्निसा : हां बिल्कुल वैसे ही पात्र थे, जैसे बानोआपा, साजो खाल, नसीम हमारे यहां इतना पर्दा

परवेज़ प्रथा थी कि सामने बारात जा रही है अगर हल्का जरासा भी पर्दा सरकार कर देख लिया तो इतनी सी बात में तलाक हो जाता था इतनी कट्टरता थी आज भी है क्यों नहीं वह लड़की बारात देख सकती है जब पूरा परिवार बारात देख सकता है तो उस लड़की ने देख लिया तो कौन सा जुर्म कर दिया। बाहर जिसकी नज़र उस लड़की पर पड़ती वह आकर बोलना अच्छा तो तुम खिड़की से झांक रही थी ससुराल वाले हैं पति हैं छोटी-छोटी बातों पर नारी को प्रताड़ित किया गया है। यही सब देखकर मुझे बहुत दु:ख होता था मैंने देखा कि घरों में महिलाएं कितना संघर्ष करती है जबकि एक ही परिवार में लड़का लड़की दोनों पल रहे हैं पर दोनों में कितना अंतर होता है।

शोधार्थी: जैसे कि अपने साहित्य में स्त्रियों पर लिखा है और लिख रही हें, तो क्या आप पहले और आज की स्त्रियों के मध्य कोई अंतर पाती है या नहीं ?

मेहरून्निसा: पहले की स्त्रियों में जो दु:ख था,वह किसी से छुपा नहीं रहा लेकिन आज की स्त्रियों पर

परवेज़ जो दु:ख आता है वह छुपा ही रह जाता है स्त्रियां छुपा लेती हैं तो क्यों छुपा लेती हैं ?

आप पढ़-लिख गई हो तो क्यों अपना अधिकार नहीं मांगती ? अगर किसी महिला पर कोई परेशानी आती है तो खानदान की इज्जत पर बात आ जाती है। अपनी बेटी की कोई फिक्र नही करता, उनकी सोच कि भी किसी को परवाह नहीं है। आज कोई हमारी पढ़ी - लिखी लड़की है जो बाहर जाती है और रात को देर से आती है तो उनसे हमें फालतू के प्रश्न नहीं करना चाहिए , उनका भरोसा करना चाहिए अगर लड़का रात भर नहीं आता तो उससे कोई प्रश्न नहीं पूछता अगर हम उन पर विश्वास नहीं करेंगे तो आगे कैसे अपने जीवन में आगे बढ़ेंगीं।

शोधार्थी: बतौर साहित्यकार आप आज की महिलाओं को क्या संदेश देना चाहेंगी ?

मेहरून्निसा: आज की महिलाओं से कहना चाहती हूं, कि तुम जब पढ़-लिख गई हो। अपने आप को

परवेज़ इतना आगे बढ़ाया है तो अपने लिए विरोध क्यों नहीं करती अगर किसी लड़की पर अन्याय होता देखकर उसके लिए आवाज उठानी चाहिए। कानून कायदे क्यों नहीं आज भी नारी के पक्ष में है जो सीता के समय अपराध था आज भी लगभग वही चल रहा है।